विद्या भवन बालिका विद्यापीठ,

शक्ति उत्थान आश्रम,लखीसराय।

विषय हिन्दी वर्ग-दशम

दिनांक- 26-09–2021

।।रस व्याकरण।।

दिए गए पठन सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें व समझें।

परिभाषा - काव्य को पढने से जिस आनंद की अनुभूति होती है अर्थात जिस अनिवर्चनीय भाव का संचार ह्रदय में होता है, उसी आनंद को रस कहा जाता है | रस का विवेचन सर्वप्रथम भरत मुनि ने अपने ग्रन्थ नाट्य शास्त्र में किया था |

भरत मुनि के अनुसार रसों की संख्या 8 है परन्तु अभिनव गुप्त ने 9 रसों को मान्यता दी है | अतः अब रसों की संख्या 9 मानी जाती है, **श्रृंगार रस में ही वात्सल्य और भक्ति रस भी शामिल हैं |**

रस और उनके स्थाई भाव----

1. श्रृंगार - रति
2. करुण - शोक
3. हास्य - हास
4. वीर - उत्साह
5. भयानक - भय
6. रौद्र - क्रोध
7. अद्भुत - आश्चर्य , विस्मय
8. शांत - निर्वेद या निर्वृती
9. वीभत्स - जुगुप्सा
10. वात्सल्य - रति
11. भक्ति रस - अनुराग